Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

July-2020, Volume : 07, Issue : 02, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

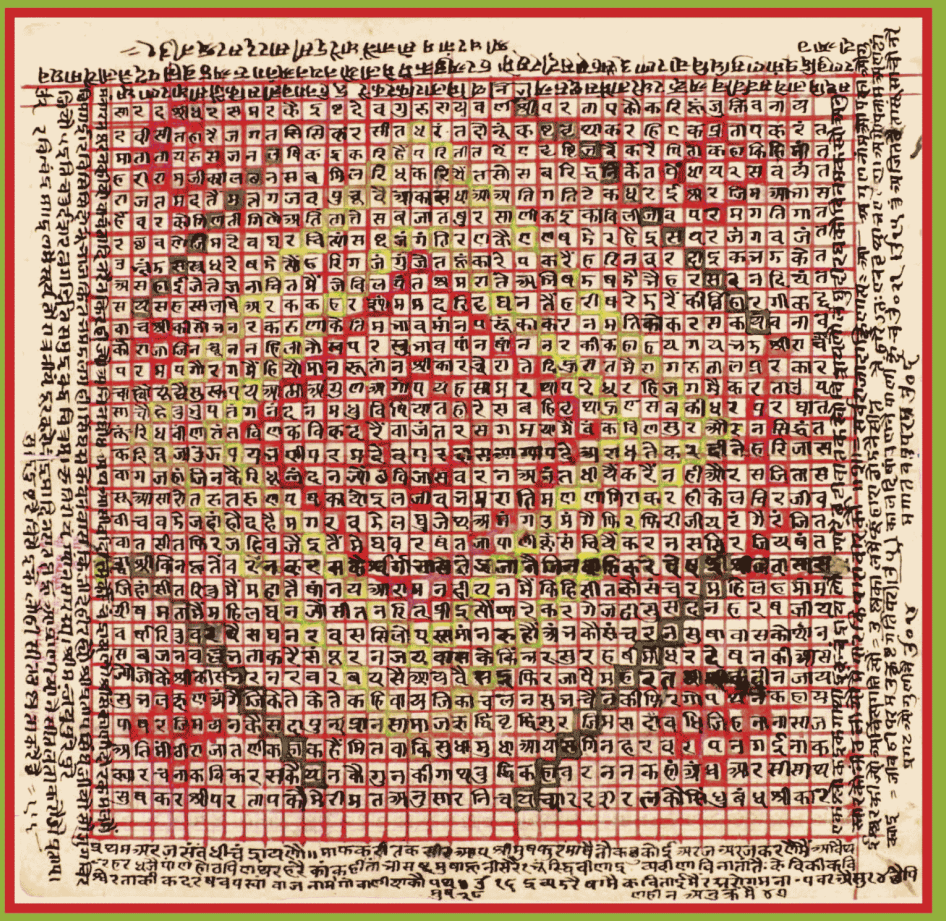

आचार्य कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर स्थित हस्तप्रत (नं.१०९३९८)

में से चंद्रायणा समुद्रबद्ध काव्य का एक चित्र.

For Private and Personal Use Only

पूज्य राष्ट्रसन्त श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का कोबा तीर्थ में चातुर्मास प्रवेश

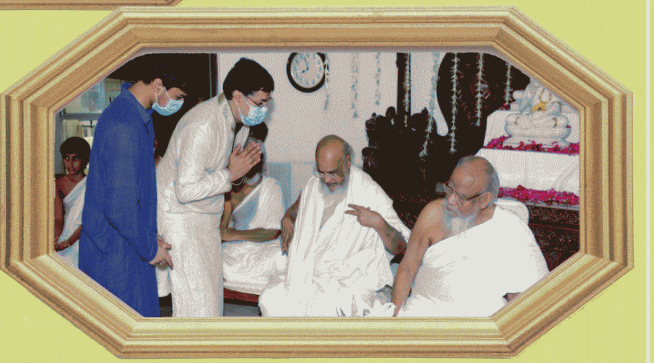

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-२, कुल अंक-७४, जुलाई-२०२०

Year-7, Issue-2, Total Issue-74, July-2020

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖

हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖

रामप्रकाश झा

❖ संपादन निर्देशक ❖

गजेन्द्रभाई शाह

❖ संपादन सहयोगी ❖

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ जुलाई, २०२०, वि. सं. २०७६, आषाढ कृष्ण पक्ष-१०

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२३२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	६
३.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	७
४.	चोवीसजिन चंद्राउला	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	८
५.	सीमंधरजिन स्तवन	डिम्पलबेन शाह	२१
६.	कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह	पुण्यविजयजी	२८
७.	प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि	राहुल आर. त्रिवेदी	२९
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमंतकुमार	३०
९.	समाचार सार	-	३२

सज्जन श्रावण मेह जिम, ऊमटीया गहगट्ट।
कोइ पिशुन पवन होई संचर्यो, तिणि मारि कीया दहवट्ट॥

प्रत क्र. १३३४३७

भावार्थ- सज्जन व्यक्ति श्रावण के घटाटोप मेघ की तरह आनंद से उमड़कर आता है, लेकिन कोई दुर्वचन (पिशुन) रूपी पवन ऐसा चलता है कि उसे दसों दिशाओं में मार भगाता है।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का प्रस्तुत अंक आपके करकमलों में समर्पित करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी के अतिरिक्त दो अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया गया है कि जैनदर्शन विश्व के किसी भी दर्शन के प्रति ईर्ष्या-द्वेष नहीं रखता है, बल्कि सभी दर्शनों का अपनी-अपनी जगह समान रूप से आदर करता है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक **'Awakening'** से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें ८४ लाख योनियों में भटकनेवाले जीव को सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर मोक्षसुख से प्राप्त होनेवाले अनन्त सुख के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्री सुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा संपादित **"चोवीस जिन चंद्राउला"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत वाचक देवविजयजी ने प्राचीन काव्यप्रकार चंद्राउला के माध्यम से २४ तीर्थंकरों की भावपूर्वक स्तुति की है। द्वितीय कृति के रूप में शहरशाखा पालडी में कार्यरत श्रीमती डिम्पलबेन शाह के द्वारा सम्पादित **"सीमन्धरजिन स्तवन"** प्रकाशित किया जा रहा है। इस कृति के कर्त्ता सहजकुशल-शिष्य ने आत्मारूप पति और मतिरूपी पत्नी के बीच पारस्परिक संवाद के माध्यम से सीमन्धरजिनरूप अतिथि को मनमंदिर में बुलाने के संदर्भ में प्रभु की भाववाही स्तवना की है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के अन्तर्गत पूज्य मुनि श्री पुण्यविजयजी लिखित **"कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह"** लेख श्रावक हीरालाल देवचंद शाह द्वारा सन् १९४१ में प्रकाशित श्री चंद्रमहत्तराचार्यकृत 'पंचसंग्रह' नामक पुस्तक के आमुख से साभार प्रकाशित किया जा रहा है। लेख के इस अंतिम अंश में पंचसंग्रह के कर्त्ता चंद्रमहत्ताराचार्य व उनकी मुख्य कृतियों के विषय में स्पष्टता की गई है।

गतांक से जारी **"पाण्डुलिपि संरक्षण विधि"** शीर्षक के अन्तर्गत ज्ञानमंदिर के पं. श्री राहुलभाई त्रिवेदी के द्वारा उपचारात्मक संरक्षण के प्रारंभिक जानकारियों का वर्णन किया गया है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत इस अंक में श्रीमानतुंगसूरि द्वारा रचित एवं श्री मलयप्रभसूरि की टीका से युक्त तथा साध्वी श्री चन्दनबालाश्रीजी के द्वारा पुनः सम्पादित **"जयन्ती प्रकरण"** सीमास्तंभ रूप पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ में भगवतीसूत्र से उद्धृत भगवान महावीर तथा जयन्ती श्राविका के बीच हुए प्रश्नोत्तर का वर्णन किया गया है। इस कृति के ऊपर आचार्य मलयप्रभसूरि ने बृहद्काय टीका की रचना की है, जिसमें अनेक दृष्टान्तों व कथाओं के माध्यम से जीवादि तत्त्वों को भली भाँति समझाया गया है।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल

आत्मामां षड्दर्शनो आदि अनेक दर्शनोनी दृष्टिओ समाइ जाय छे। क्षयोपशमभावे अनेक मत दृष्टिओ जगतमां उत्पन्न थाय छे। सम्यक् क्षयोपशमे असंख्य दृष्टिओ उद्भवे छे पण ते सर्वे परस्पर विचार सापेक्षताए एक सांकळना अंकोडानी पेठे संबंधित थएली होय छे। कुक्षयोपशमे असंख्य दृष्टिभेदो पडे छे अने ते दृष्टिओ परस्पर एक बीजानी साथे संबंधित थती नथी।

'जावइया वयणपहा, तावइया चेव हुंति नयवाया' आ वाक्यने अनुसरी जेटला वचन-शब्दो छे ते अर्थात् जेटला वचनमार्गो छे तेटला नयवादो छे। सर्वनयवादो सापेक्ष दृष्टिए सम्यक्त्वना छे अने सर्वे नयवादो एक बीजानी अपेक्षा विना मिथ्यात्वने अनुसरनारा छे। जेटला नयवादो छे तेटलां दर्शनो-मतो छे। सर्व मतो अगर दर्शनोनो आधार क्षयोपशमभावे आत्मा होवाथी सर्वनय सापेक्ष दृष्टिए आत्मामां वस्तु स्वभावे धर्मनो आविर्भाव करवा प्रयत्न करवो जोइए।

"षड्दर्शन जिन अंग भणीजे" ए वाक्यने आत्मामां सापेक्षपणे उतारवामां आवे तो विश्वमां प्रवर्त्तता अन्य सर्व धर्मोपर सापेक्ष दृष्टिए आत्मभाव प्रवर्त्तवाथी सर्व धर्मोमांथी सम्यक् सार खेंचवानी विवेकशक्ति प्रकटे छे अने तेथी सर्व धर्मो पर समभाव प्रवर्ते छे। कोइ धर्म पर इर्ष्या-द्वेष उत्पन्न थतो नथी। तेमज कोइ धर्म पर मिथ्या राग-कदाग्रह थतो नथी। सर्व धर्मो पर समभावनी परिणति वहेवाथी राग अने द्वेषमां बंधाववानुं थतुं नथी।

अनंतानुबंधी कषाय अने सम्यक्त्व मोहनीयादिनो उपशमादि भाव थवाथी आत्मामां सम्यक्त्वगुण उद्भवे छे अने तेथी वस्तुने वस्तुस्वभावे सम्यग् अवबोधी शकाय छे। आवी सम्यक्त्वदशाने विरल ज्ञानीओ धारी शके छे। आवी सम्यक्त्वदशा प्राप्त थया पश्चात् अनेक मत पन्थोना क्लेशोमां हर्ष उत्पन्न थतो नथी, तेमज सर्व मतोमांथी सापेक्ष दृष्टिए सार खेंचवानो विवेक प्राप्त थवाथी पक्षपातदृष्टि रही शकती नथी। तेथी सम्यक्त्वदशावंत ज्ञानीओ स्याद्वाद तत्त्वना अविरोधीपणे अन्य धर्म शास्त्रोमांथी सार दृष्टिए सापेक्षपणे जे जे अंशे जे जे कंइ सत्य होय छे, ते माने छे अने अन्य बाबतोमां निरपेक्ष रहे छे।

क्रमशः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ६८५-६८६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

It is the mind that causes bondage as well as deliverance. If a cow is released from the place where it is tied to a tether it begins to jump with joy. If a bird is released from its cage it begins to cry with joy. But man is the only creature that, for the sake of transitory pleasures, desires to fall into the bondage of samsar (worldly life). He does not move towards moksha which gives him everlasting joy.

The creatures that keep wandering in eighty four lakh forms achieve the level of human life with great difficulty. Only, in this phase namely human life salvation can be attained by a Jiva; otherwise, in order to experience the fruits of sin and merit, creatures move from the level of divinity to the level of animal life and to hell and from there again to animal life and divine life.

They keep moving to and fro like shuttle-cocks. Only the mind carries out both elevated contemplation and degrading contemplation. In the same manner, it can also perform the tasks of contemplating on Dharma and purity. From time to time the whirlwinds of noble and ignoble thoughts rise in it.

If the mind has no peace, we will suffer from indigestion and on account of it we get all kinds of bodily ailments. If we want our body to be healthy we should keep our minds clam and peaceful. It is to be remembered that we should always keep our minds filled with pure and noble thoughts. This is the right way of using the mind.

(continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाचक देवविजयजी कृत

चोवीस जिन चंद्राउला

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

चंद्राउला काव्य परिचय-

रास, चोपाइ, छंद, बारमासा जेवा मारुगुर्जर भाषाना काव्य प्रकारोनी जेम चंद्राउला अने चंद्रायणा ए बे काव्य प्रकारो पण मारुगुर्जर भाषाना बे अप्रसिद्ध काव्य प्रकारो छे। जो के आ काव्य प्रकारनुं बंधारण कई रीते होय छे तेनी क्यांय चोक्कस नोंध मळती नथी। सुप्रसिद्ध विद्वान जयंतभाई कोठारीए पोताना "जयवंतसूरिनी छ काव्यकृतिओ" पुस्तकमां चंद्रायणा प्रकार अंगे निम्नोक्त विगतो आलेखी छे।

"चंद्रायणा के चंद्रायणी कुंडल प्रकारना छंदबंधनुं नाम छे। तेनो एकम बे छंदो (दूहा के आर्या अने कामिनीमोहन एटले के मदनावतार) नी बे कडीओनो बनेलो होय छे। अहीं पहेली कडीना अंतिम शब्दो बीजी कडीना प्रारंभे पुनरावृत्त थाय छे"

अहीं कोठारी साहेबना मते चंद्रायणानुं पहेलुं लक्षण-२ भिन्न छंदोनी (जो के दूहा, आर्या के कामिनीमोहन सिवायनो छंद होय तो चाले के नहीं ते तो प्रश्न रहे ज छे) तेमां २ कडीओ होय, बीजुं लक्षण-काव्यनी चोथी तथा पांचमी पंक्ति पुनरावर्तन पामती होय, तेवुं उपरोक्त नोंध जोता समजाय छे।

हवे आपणे चंद्राउला काव्य प्रकार अंगे थोडुं विचारीए। प्रस्तुत कृति जोता चंद्राउला काव्य पण चंद्रायणा प्रकारनी जेम ज २ भिन्न छंदोनी २ कडीओनो छंद लागे छे। प्रस्तुत कृतिमां आपणे जोइ शकीए छीए के अहीं कृतिकार देवविजयजीए बे विभिन्न छंदोनी २ कडीओनुं १ पद्य बनावी चोथा-पांचमामां चरणनी पुनरावृत्ति द्वारा काव्यने रसाळ बनाव्युं छे। अहीं प्रस्तुत कृतिगत चंद्राउलाना लक्षणो तारवता ते लक्षणो कोठारी साहेब द्वारा उल्लेखायेल चंद्रायणाना (छंद प्रकार सिवायना) लक्षणोथी सहेज पण भिन्न जणाता नथी अने तेथी कदाच एवुं पण विचारी शकाय के चंद्रायणा के चंद्राउला ए बन्ने काव्य प्रकारो एक ज काव्य प्रकारना भिन्न-भिन्न नामो हशे। खरेखर तो आ अटकळ त्यारे ज साची गणाय के ज्यारे ते संदर्भनी सामग्रीओनो विशेष अभ्यास थाय। जो के हाल अमो ते अंगे कशु कही शकीए तेम न होवाथी चंद्रायणा के चंद्राउला संबंधि मळती जैन-जैनेत्तर साहित्यनी एक सूचि आपी संतोष मानीए छीए। आगळ कोई विद्वान आ विषय पर विस्तृत अभ्यास करी प्रस्तुत काव्य प्रकार पर विशेष प्रकाश पाथरे ते जरूरी छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रम	ग्रंथ नाम*	कवि नाम	गाथा प्रमाण	आदि पद
१	अजितजिन स्तवन चंद्रायणा (H)	लक्ष्मीकल्लोल	१३	वंश इक्ख्याग मंडणउ रे...
२	आदिजिन चंद्राउला (H)	हेमविजय	५	सरसति सामिणि समरियइं रे...
३	कक्काबत्तीसी चंद्राउला (A)	उदयसागर	-	श्रीगरवा गुणवंत वचननुं...
४	गौतमस्वामी चंद्राउला (A)	कुशलहर्ष	१३	सरस वचन जिनवर तणउ रे..
५	चंद्रायणा (A)	कर्मचंद्र ऋषि	-	-
६	चंद्रायणा (A)	जिनचंद्रसूरि शिष्य	-	-
७	चंद्रायणा (A)	दर्शनविजय शिष्य	-	-
८	चंद्रायणा (A)	मलयकीर्त्ति	-	-
९	चोवीसजिन चंद्राउला (A)	देवविजय	४९	श्रीसरसती चरणे नमी रे...
१०	चोवीसजिन चंद्राउला (H)	ज्ञानविमल	३५	निज गुरु चरण...
११	चोवीसजिन चंद्राउला (A)	ऋषभ	२५	नाभिरायाकुलकेसरी रे...
१२	चोवीसजिन चंद्राउला (A)	आनंदविजय	५४	सरस वचन सारद दीउ...
१३	जसवंत गुरुना चंद्राउला (A)	अज्ञात	२१	श्रीसिद्धारथ खित्रि कुलि उपना रे..
१४	जिनचंद्रसूरि चंद्राउला (H)	समयसुंदर	४	श्रीखरतरगच्छ राजीयउ...
१५	जिनप्रबोध-जिनचंदसूरि चंद्राउला (P)	मोदमंदिर गणि	५	वंदहु निम्मलनाणनिहि..
१६	जिनसुखसूरि चंद्राउला (A)	धर्मवर्धन	५	सहु धर्मा सिर सेहरो...
१७	जिनेश्वरसूरि मदनयुद्ध चंद्राउला (A)	जिनेश्वरसूरि शिष्य	१२	हलि पंच कुसुमसरि विसरु...
१८	नेमिजिन चंद्राउला (H)	ज्ञानसागर	१४४	सरसति भगवति मन धरी रे....
१९	नेमिजिन चंद्राउला (A)	गुणनिधान शिष्य	२६	दोई कर जोडी वीनवुं रे...
२०	नेमिजिन चंद्राउला (A)	हेमविजय	४४	समरीय समरस सागरू रे...
२१	नेमिजिन चंद्राउला (P)	लब्धि	२९५	सरसती सरस वचन द्यो मुजने..
२२	नेमिनाथ चंद्राउला (A)	अज्ञात	४६	सरसती सरस वचन दे मुने...
२३	पार्श्वनाथ चंद्राउला (P)	अज्ञात	१५१	प्रथम नमी जिनराजने...
२४	पार्श्वनाथ चंद्राउला (H/P)	राजपाल	८८	सरसतीनइ समरी करी रे...

* आ. कै. ज्ञानमंदिरमां संकलित हस्तप्रत (H), प्रकाशन (P) अने अन्य भंडारनी कृति माटे (A) संकेत आपेल छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२५	प्रतापसिंह चंद्रायणा (समुद्रबंध काव्य) (H)	अज्ञात	-	सारद श्रीधर समरतें...
२६	बिलाडामंडन पार्श्वनाथ स्तोत्र चंदाउला (A)	नगर्षि	२९	सरसति सामिणि वीनवुं रे...
२७	भरत-बाहुबलीना चंद्राउला (H)	लालविजय	२९	आदे आदि जिणेसरू रे..
२८	महावीरजिन चंद्राउला (A)	ऋषभ	२१	-
२९	विजयदेवसूरि चंद्राउला सज्झाय (A)	प्रेमविजय	-	-
३०	विजयराजसूरि गुण चंद्राउला [भास] (A)	दानसागर	९	सरसति सामिनि विनवुं रे...
३१	शंखेश्वर पार्श्वनाथ चंद्राउला (A)	उदयसागर	५	आज मनोरथ सवि फल्या...
३२	शांतिनाथ चंद्राउला (H/P)	जिनेन्द्रसागर	२५	अचिरानंदन प्रणमिये रे...
३३	संवेग रस चंद्राउला (H/P)	लींबो	४९	सकल सूरिंद नमइ सदा रे...
३४	सीमंधरजिन चंद्राउला (A)	जयवंतसूरि	२७	विजयवंत पुष्कलावती रे...
३५	सीमंधरजिन चंद्राउला (A)	उत्तमसागर	२३	-
३६	सीमंधरजिन चंद्राउला (P)	विमलकीर्त्ति	१३	सहिस पंचाससु परवर्यउ रे...
३७	स्थूलिभद्र चंद्राउला (A)	उदयसागर	१४८	चंद्र किरण जिम निरमली..
३८	स्थूलिभद्र चंद्राउला (A)	जयवंतसूरि	१४७	कवियन माई सारदा...
३९	हीरविजयसूरि चंद्राउला (H)	लखमण	८	सकल सोभागी सुंदरुं रे...

जैनेतर रचनाओ[1] -

(१) गोविंदराम कृत भ्रमर गीता चंद्राउला (२) रूघनाथ कृत प्रह्लादना चंद्राउला (३) हरिदास कृत महाभारत चंद्राउला तथा जूनागढ चंद्राउला (४) जे. कृष्णदास कृत रामायण चंद्रायणा तथा सुदामाना चंद्रायणा (५) फूढ कृत मल्ल अखाडाना चंद्राउला (६) पूजा सुत (अज्ञात कवि कृत) नल राजाना चंद्राउला। (७) हेमराज कृत चंद्रायणा (८) अज्ञात कवि कृत द्वादश भास, चंद्रकुंवर प्रीतिप्रसंग तथा अन्य ३ चंद्रायणा।

---

1. आमांनी कोईपण कृति अमारा जोवामां आवी नथी आ सूचि फक्त हस्तप्रतना सूचिपत्रना आधारे थई छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृति परिचय

कृतिना नाम प्रमाणे प्रस्तुत कृति २४ जिनेश्वरोनी चंद्रायणा प्रकारनी स्तुतिपरक रचना छे। अहीं कविए तीर्थंकरोनी स्तवना करता करता पोताना प्रभु प्रत्येना अविहड रागनी वर्णना तो करी ज छे साथे साथे मानवभवनी दुर्लभतादि वातो रजू करता तेमणे अहीं विविध धर्मोपदेश पण गुंथी काढ्यो छे। कृति सरळ होइ ते संदर्भे विशेष चर्चा करवानी कोई जरूर जणाती नथी। परंतु एटलुं कहेवुं तो जरूरी खरुं के प्रस्तुत कृति भाषा साहित्यनी दृष्टिए एक रसाळ रचना छे। कविए प्रयोजेल शब्दो तथा प्रासो ज काव्यने वधु आकर्षक बनावे छे। विशेषमां अहीं काव्यान्तमां कविए "रही सुरत चोमास" फागण वि(व)द पांचिम रवि "ए बे पद प्रयोजी पोते सं. १७७८ना वर्षे सुरतमां चातुर्मासार्थे पधार्या हता तेनो तथा ते ज वर्षे फागण वद ५ना रविवारे प्रस्तुत कृतिनी रचना कर्यानो ऐतिहासिक उल्लेख करी ग्रंथलेखन पुष्पिकामां चैत्र सुदि ११ना दिवसे स्वहस्ते ज कृतिनुं आलेखन कर्यानी महत्वपूर्ण माहिती आलेखी छे।"

कृतिकार

वाचक देवविजयजी तपागच्छीय विजयरत्नसूरिनी परंपराना साधु छे। एमणे प्रस्तुत कृति सिवाय अन्य पण नेम-राजुल बारमासा तेमज शीतलनाथ स्तवन विगेरे अन्य अनेक कृतिओनी रचना करी छे। जो के अहीं के अन्य कोई ठेकाणे एमना जीवनचरित्रनी कशी नोंध जोवा मळती नथी । कदाच तेमना अन्य कोई ग्रंथो मळे अने तेमांथी कोई सामग्री मळे तो तेनी तपास करवी रही। प्रस्तुत कृतिना आधारे कर्तानो समय १८मी शताब्दिनो उत्तरार्ध प्राप्त थाय।

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृतिनुं संपादन मुंबइ-गोडीजी जैन ज्ञानभंडारनी हस्तप्रत परथी करायुं छे। कृतिनी लेखन पुष्पिकामां नोंधाया प्रमाणे कृति रचायानी सालमां कृतिकारश्री वडे ज कृति लखाई छे। जो के कृतिनी साद्यंत तपास करता तथा लेखनमां थयेल स्खलनाओ जोता लेखन प्रशस्ति सहितनी संपूर्ण कृति मूळ आदर्श प्रतमांथी उतारेली प्रतिलिपि ज लागे छे। हां एटलुंय खरुं के लहियानी असावधानीने लीधे मूळ आदर्श प्रतमांथी करातो उतारो पण अशुद्ध थयो छे। खास अहीं ए अशुद्ध पाठने अमे अमारा क्षयोपशम मुजब सुधारवानो प्रयत्न कर्यो छे ते बाबत वाचको ध्यानमां ले। प्रान्ते संपादनार्थे प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रत नकल आपवा बदल गोडीजी जैन ज्ञानमंदिर-मुंबइना व्यवस्थापकोनो आभार ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोवीस जिन चंद्राउला

॥ढि०॥ चंद्राउला ॥

श्रीसरसती चरणे नमी रे, गासुं हुं जिनराय,
ऋषभ जिणंदने भेटवा रे, मुझ मन हर्ष न माय।
मुझ मन हर्ष न माय जिणंदा, दीठो तुमे शिवसुख कंदा,
आपो प्रभु सुख संपति स्वांमी, भव भव होजो प्रभु ज सांमी ॥१॥

जी वालेसरजी रे (आंकणी)

तुझ विरहो न खमी सकुं रे, राति दिवस नवि जाय,
दूर रह्या जे सज(ज्ज)नां रे, ते दुख में[१] न खमाय।
ते दुख में न खमाय ज कहीइं, जिम जिम सांभरे तिम दुःख सहीइं,
वहली[२] करयो सेवक सार, तुझ विण को नहीं बि(बी)जो आधार ॥२॥ जी...

* * *

अजी(जि)त जिणेसर वि(वी)नवुं रे, गी(गि)रूआ साहिब देव,
तुज सरीखो प्रीतम लही रे, किमही न छोडुं सेव।
किमही न छोडुं सेव सनेही, साहिब माहरो बहु गुणगेह,
दीठे तुझने हुं सुख पाउं, राति दिवस हुं तुझने ध्याउं ॥३॥ जी...

नेह दी(दि)सा[३] तुमथी प्रभु रे, मुझ मनमें तुं होय,
तुमथी बांधी प्रीतडी रे, अति घणुं सु कहुं तोय।
अति घणुं सुं कहुं तोय रे सांमी, पुरव पू(पु)न्यथकी में पांमी,
री(रि)दयकमलमें तुं मुझ वसीयो, साहिब दीठे मन उल्लसीयो ॥४॥ जी...

* * *

संभव जिनसुं नेहलो रे, कि(की)धो विसवावीस[४],
गी(गि)रूआइ ए तुम तणी रे, तुं तो मोटो ईस।
तुं तो मोटो ईस ज दीठो, वालेसर छे घणुं मुज मीठो,
कहवुं होवे ते ते मुझ कहीइं, तुमथी लहणुं[५] होय ते लहीइं ॥१॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक घडी किम करी गमुं[६] रे, तुझ विरहो न खमाय,
के आगल कहुं वातडी रे, मुझ मनमें न समाय।
मुझ मनमें न समाय सनेही, प्रीत तणी रीत दीसे एही।
खिण खिण खटके[७] प्रीतम प्यारो, क्रिपा करीने मत वीसरो ॥२॥ जी...

❋ ❋ ❋

अभी(भि)नंदन गुण ताहरा रे, ते तो में न कहवाय,
तुं सिवगामी छे प्रभु रे, दीठे सफल विहाय[८]।
दीठे सफल विहाय जिनेसर, तुं तो दीसे अति अलवेसर[९],
थोडुं कहे तुमे घणुं मन आंणो, नेह दी(दि)साथी मनमां जांणो ॥१॥

हुं चाहुं छुं चित्तथी रे, कपट नहीं मुझ कोय,
मन वच कायाथी कहुं रे, सांभलयो प्रभु सोय।
सांभलयो प्रभु सोय हमारी, किमही न छोडुं भक्ति तुमारी,
दीजीइं मनवंछी(छि)त सुख जेहा[१०], तुम विण जाचुं नहीं ससनेहा ॥२॥

❋ ❋ ❋

सुमति सुमति नी(नि)स दिन करु(रुं) रे, मुखथी न मेलुं नांम,
ते तो पांमी रीध घणी रे, अविचल पदवी ठांम।
अविचल पदवी ठांम ज पांमी, तुम दीठे में दू(दु)र्गति दामी[११],
मेहर करीने नी(नि)जरे नी(नि)हालो, नी(नि)ज सेवकनी आपदा टालो ॥१॥

कहवुं स्यू(स्युं) छे स्वामीने रे, मनमें जांणे तेह,
तोहे पण कहवुं खरुं रे, जेहसूं(सुं) होए बहु नेह।
जेहसूं(सुं) होये(ए) बहु नेह सगाई, जण जणसुं(सुं) मन की(कि)म मले भाई,
समय समय हुं की(कि)महीं न मूंकुं, ए अवसर हुं की(कि)महीं न चूकूं(कुं) ॥२॥

❋ ❋ ❋

पद्मप्रभ तुमे सांभलो रे, सेवकनी अरदास,
दीठो ठाकुर तुं धणी रे, कां न पूरो अम आस।
कां न पूरो अम आस सामी, ते तो मोक्ष ज पदवी पांमी,
सेवक जनने कां न संभारो, बांह ग्रहीने पार उतारो ॥१॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बांह ग्रह्यानी लाज छे रे, मोटाने वली तेह,
ओछुं न दाखे आपणुं रे, दिन दिन अधिको नेह।
दी(दि)न दी(दि)न अधिको नेह ज कीजे, प्रीतमथी कदी छेह[१२] न दीजे,
एहवी होए मोटानी रीत, माहरे तुमसूं(सुं) अवी(वि)हड प्रीत ॥२॥

* * *

सुपास जी(जि)ननने भेटज्यो रे, जो चाहो सुखवास,
तीन {त्रि}लोकनो छे धणी रे, सू(सु)र नर एहना दास।
सू(सु)र नर एहना दास ज दीठा, मुक्ति तणा सुख चाहो जो मीठां,
मन वच कायाथी आराधो, जन्म तणुं फल ए तुमे साधो ॥१॥

वली वली नहि पांमो सदा रे, मांनव भव तुमे एह,
पछे पछतावो होयसी[१३] रे, सफल करो ससनेह।
सफल करो ससनेह रे सयणां, मांनज्यो नी(नि)श्चे एह ज वयणां,
सुपन तणी परे ए सहु जांणो, ज्ञान दिसा तुमे मनमें आंणो ॥२॥ जी...

* * *

चंद्रप्रभु जी(जि)न आठमा रे, पाम्या सी(शि)वपद ठांम,
तुमथी प्रीत करी खरी रे, मुखथी न मेलुं नांम।
मुखथी न मेलुं नांम रे ताहरूं(रुं) {उं}, दरी(रि)सण दीठे दू(दु)ख गयुं महारूं(रुं) {रउं}
मुझ मनमें तुं वसीयो देव, की(कि)मही न करूं(रुं) हुं अन्यनी सेव ॥१॥

चिंतामण तुं मुझ मिल्यो रे, आस्या पूरणहार,
काच पथ(थ्थ)र हुं नवि ग्रहुं रे, तुं तुं(तू)ठो नी(नि)रधार।
तुं तुं(तू)ठो नी(नि)रधार ज कहीइं, मनवंछित फल तुमथी लहीइं,
देव घणां में मूंक्या जोई, माहरे मन मान्यो नहि कोई ॥२॥ जी....

* * *

सुवधी(विधि) सुवधी(विधि) हुं करूं(रुं) रे, समय समय सो वार,
तुम विना माहरे को नहि रे, बीजो ते आधार।
बीजो ते आधार जिणंदा, तुं साहिब दीठो सुखकंदा,
की(कि)मही न मुं(मूं)कुं ताहरो केडो, भावथकी तुं तो छे नेडो[१४] ॥१॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेगला ते पण ढूंकडा[१५] रे, ढूंकडा ते पण रान[१६],
आंगल च्यारने अंतरे रे, आंखि न देखे कान।
आंखि न देखे कान रे लोको, मन मान्या विण सघलुं फोको[१७],
जगमांहे केई भलेरा दीसे, ते देखीने मन नवि हिं(ही)से ॥२॥ जी...

❋ ❋ ❋

सीतल साहिब सेवज्यो रे, चिहुं गति टालणहार,
नांमथकी नव नी(नि)ध मिले रे, पांमो ज्युं सुख अपार।
पांमो ज्युं सुख अपार संसारे, पूजो जी(जि)नवर तुमे नी(नि)रधारे,
जो चाहो तुमे सी(सि)वगत(ति) सारी, मनसू(सु)द्धे सेवो संभारी ॥१॥ जी...

नी(नि)स दीन चाहुं तुम प्रते रे, समय न भूलू(लुं) तोय[१८],
तुं साहिब मुज वालहो रे, अन्य न दीठो में कोय।
अन्य न दीठो में कोय रे साचुं, तुझ विण जगमांहे सहु काचू(चुं),
जे तुझने मनमें नहीं आंणे, तेहनो जन्म गयो अप्रमाणे ॥२॥ जी....

❋ ❋ ❋

श्रेहं(यां)सनाथ सोहामणो रे , त्रिहुं जगनो आधार,
सुर नर की(कि)न्नर देवता रे, प्रतिबोध्या ते अपार।
प्रतिबोध्या ते अपार रे देवा, मीठे वचने सहु करे सेवा,
नेह दी(दि)सा मुझ तुमथी जागी, भव भवनी मुझ भावठ भागी ॥१॥ जी...

भावठ भागी माहरी रे, तुम दीठो की(कि)रतार,
सुपनांतर पण ताहरूं(रुं) {रउं} रे, नवि विसरूं(रुं) नी(नि)रधार।
नवी(वि) वी(वि)सरूं(रुं) {रउं} नी(नि)रधार सनेही, मन वचसुं सोंपी[१९] तस देही,
गुण अवगुण मुज नी(नि)रवही लीजे, बांह ग्रहीने छेह न दीजे ॥२॥ जी...

❋ ❋ ❋

वासुपूज्य जी(जि)न बारमा रे, महिष लंछन तस पाय,
चोसठ इंद्र सेवा करे रे, भु(भू)प सवे गुण गाय।
भु(भू)प सवे गुण गाय जी(जि)णंदा, पूनी(नि)म ससी दीठो सुखकंदा,
मुज मन मोह्युं तुजने देखी, त्री(तृ)प्त न पांमुं हुं तुझ पेखी ॥१॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कही की(कि)म जाए वातडी रे, विरह समुद्रनी तेह,
पर उपगारी सज(ज्ज)ना रे, की(कि)मही न दाखे छेह।
की(कि)मही न दाखे छेह सगाई, मनमान्यानी दीसे भलाई,
प्रीत तणे वस जे नर लीना, मन वच काया{ये} तेहसूं(सुं) भीना ॥२॥ जी...

* * *

विमल विमल नी(नि)र्मल करे रे, कर्मनो टाले मेल,
सी(शि)वपुर मारग चालतां रे, मोक्ष ते तेहने सेल[२०]।
मोक्ष ते तेहने सेल रे लोको, पूजो प्रणमो भवि मीलि(मिली?) थोको[२१],
जो जांणो तो लीजो लाहो, ईह भव पर-भव जो सुख चाहो ॥१॥ जी...

सुख चाहो जो सास्वतां रे, तो मन राखो सुध(द्ध),
मुं(मूं)को मिथ्या मनथकी रे, टालो कपट विरुध(द्ध)।
टालो कपट विरू(रु)ध(द्ध) रे सयणां, मीठां एहवां छे जी(जि)नवयणां।
मांनज्यो तुमे ए माया[२२] राखी, अनुभव रस तुमे जु(जू)ओ चाखी ॥२॥ जी...

* * *

अनंत बलना जे धणी रे, **अनंत** जी(जि)णेसर तेह,
नव नीधी(निधि) जेहने आगले रे, गुणमणिना जे गेह।
गुणमणिना जे गेह जिणंदा, उग्या ससी जी(जि)म पूनी(नि)म चंदा,
चोसठ इंद्र ज सेवा सारे, भव-भवथी ए पार उतारे ॥१॥ जी...

मोटानी जे सेवना रे, नीफल[२३] ते की(कि)म जाय,
चिंतामण जीणे आदर्यो रे, काच ज ते की(कि)म थाय।
काच ज ते की(कि)म थाय रे कहीइं, मनवंछित सुख तेहथी लहीइं,
पू(पु)न्यथकी स्यूं(स्युं) स्यूं(स्युं) नवी(वि) थायें(ए),
जी(जि)नजी दीठे भावठ[२४] जाये(ए) ॥२॥ जी...

* * *

धर्म जिणेसर धर्मथी रे, चिहुं गति टालणहार,
दान शील तप भावना रे, सिवपू(पु)र मारग सार।
सी(सि)वपू(पु)र मारग सार रे भाई, मी(मि)थ्यामतिनी मेलो सगाई,
जो चाहो तुमे सी(सि)वसुख राज, रे भविको करो एहवां काज ॥१॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो नहि करो तो हारस्यो रे, मांनव भव फल तेह,
फी(फि)री फी(फि)री नहीं पांमो सदा रे, ए अवसर गुणगेह।
ए अवसर गुणगेह न चुं(चूं)को, ल्यो लाहो तुमे कपट ज मुं(मूं)को,
च्यार दिवसनो जगमांहे वासो, वली वली नहीं पामो ए तमासो[२५] ॥२॥ जी...

* * *

सांती(ति) जी(जि)णंद ए सोलमां रे,
सांतिकरण सुखदाय,नांम जपंतां जेहनुं रे, जगमें सुख बहु पाय।
जगमें सुख बहु पाय रे सयणो[२६], साचां मांनज्यो जिन तणां वयणो।
भु(भू)लो मत तुमे मायाने देखी, पतंग-रंग परे रीध पेखी ॥१॥ जी...

रीध ज न रहे केहनी रे, नंद वी(वि)चारी जोय,
रावण सरीखा राजवी रे, लंका ते गया खोय।
लंका ते गया खोय रे दीठा, पू(पु)न्यथकी मत थाओ धीठा[२७],
वली वली नहि पांमो तुमे एहवुं, सु(स्व)प्न तणी परे छे सहु तेहवुं ॥२॥ जी...

* * *

कुंथु जी(जि)णंदने सेवज्यो रे, सहु मिलीने नर नार,
जी(जि)म संसारे सुख लहो रे, कीरत पामो उदार।
कीरत पामो उदार रे जीवो, समकी(कि)त-रस तुमे गट गट पीवो,
देव गुरु जी(जि)नधर्म आराधो, मुक्ति तणां तुमे ए फल साधो ॥१॥ जी...

मुक्ति तणां सुख सास्वतां रे, जन्म मरण नहि कोय,
अविचल पदवी छे तिहां रे, आवागमन न होय।
आवागमन न होय संसारे, जी(जि)नजी दीठे दू(दु)र्गति वारे,
जो सुख चाहो संसारना प्रांणी, आराधो देव गुरु मन जांणी ॥२॥ जी...

* * *

आठ करम जिणे खेपव्यां रे, **अर** जिणेसर तेह,
केवल पांमीने गया रे, सीधी(सिद्धि)पदे गुणगेह।
सीधी(सिद्धि)पदे गुणगेह रे जांणो, तप जप कीरी(किरि)या तास वखाणो,
तीन {त्रि}लोकनो ए छे स्वामी, रे भविको प्रणमो सी(सि)र नामी ॥१॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामी तेह ज जांणीइ रे, जे राखे बहु प्यार,
जण जणसुं ते नवि मिले रे, एकथकी ईखत्यार[२८] ।
एकथकी ईखत्यार रे राखे, प्रीत तणां फल तेह ज चाखे,
जण जणसूं(सुं) मत मी(मि)लज्यो भाई, की(कि)महि(ही) नहि रहे नेह-सगाई ॥२॥ जी...

* * *

मल्ली(ल्लि) जिन ओगणीसमा रे, स्त्रीवेदे अरिहंत,
प्रतिबोध्या जी(जि)णे आपथी रे, छ राजा एकंत ।
छ राजा एकंत रे सुणज्यो, समकी(कि)तधारी थया भवि गु(ग)णज्यो,
मुं(मूं)की संसारनी ममता माया, संजम लेवाने ते धाया ॥१॥ जी...
संजम मारग दोहिलो रे, जेहवी खेडा धार[२९],
एकण द्री(दृ)ष्टे चालवुं रे, तो ते पांमे पार ।
तो ते पांमे पार रे दीठा, मी(मि)थ्यामतिथी ते थया धीठा,
जन्म तणो ए लाहो लीजे, तो मनसूधे कारी(रि)ज कीजे ॥२॥ जी...

* * *

मुनि(नि)सू(सु)व्रत जी(जि)न जांणज्यो रे, सेवकनी अरदास,
नी(नि)स दीन चाहुं तुम प्रते रे, मिलवानी मुज आस ।
मी(मि)लवानी मुज आस सनेही, माहरे प्रीतम तुं गुणगेही,
मेहर करीने नी(नि)जरे नीहालो, भव भव संचित पाप पखालो ॥१॥ जी...
पाप गयां दीठां थकी रे, प्रभुपद पंकज जेह,
अंधकार जिम नवि रहे रे, रवि उगंतां तेह ।
रवि उगंतां तेह रे सयणो, साचां मांनज्यो एहवा वयणो,
संदेह मनमें तुमे मत राखो, जो प्रीतम अमृतरस चाखो ॥२॥ जी...

* * *

नमी(मि) जी(जि)णंद एकवीसमा रे, दुखना टालणहार,
ईह भव पर-भव एहथी रे, सुख पांमीजे अपार ।
सुख पांमीजे अपार रे भाई, ते कारण सेवो ए सखाई,
चिहुं गतिना जो तुमे दुख टालो, जिनवर आंणा निश्चे पालो ॥१॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जी(जि)ननी आंणा तो पले रे, जो मन निश्चे होय,
क्रोध मांन मायाथकी रे, पांतर्या[३०] छे सहु कोय।
पांतर्या छे सहु कोय संसारे, विरह वि(व्य)था जगमें निरधारे,
खोटी छे संसार सगाई, दीठे रखे तुमे भलता भाई ॥२॥ जी...

❋ ❋ ❋

जादवकुलना ऊपना रे, **नेम** जी(जि)णेसर नांम,
तोरणथी पाछा वल्या रे, राजुल छंडी तांम।
राजुल छंडी तांम सगाई, **गी(गि)रनारे** चाल्यो नीज(जिन) धाई,
तिहां जईने प्रभु संजम लीधो, नेमे आपणो कारी(रि)ज कीधो ॥१॥ जी...

राजीमती ती(ति)हां चिंतवे रे, कंते छांडी केम,
पसुअ पु(पू)कार सुणी करी रे, दया विचारी एम।
दया विचारी एम संसारे, लेस्युं संजम हुं नी(नि)रधारे,
विरह तणो दुख केम खमाए, पीउ दीठा विण मुज जीउ जाए ॥२॥ जी[1]...

❋ ❋ ❋

अस्वसेन सुत जांणीइं रे, **वामा**देवीनो नंद,
नयरी **वाणारसी** ऊपनो रे, **पास**कुमर सुखकंद।
पासकुमर सुखकंद रे सेवो, मांनव भवनो फल ए लेवो,
धरणीधर पदमावती देवा, सुर नर सारे प्रभुनी सेवा ॥१॥ जी...

कीरत ताहरी चिहुं दीसे रे, देस विदेसे नांम,
तुं तो ठाकुर माहरो रे, वंछित पूरे कांम।
वंछित पूरे कांम में दीठो, मुज मनमें तुं हि ज घणुं मीठो,
रात दिवस हुं तुम गुण गाउं, समय समय हुं तुम ध्याउं ॥२॥ जी...

❋ ❋ ❋

जी(जि)नसासननो जे धणी रे, चोवीसमो ए जी(जि)णंद,
वर्धमान नांमे भलो रे, टाले कर्मनो फंद।

---

1. खोटी छे संसार सगाई, दीठे रखे तुमे भु(भू)लता भाई-आ पंक्ति नेमिनाथ प्रभुना काव्यमां वधारानी लागे छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टाले कर्मनो फंद ए स्वामी, ते तो बहुली रीध ज पांमी,
भव भव देज्यो तुम पाय सेवा, कर जोडी मागुं छुं देवा ॥१॥ जी...

कर जोडी कहवुं खरू(रुं) रे, आपणा स्वामीने तेह,
चाहुं छुं तुमथी प्रभु रे, हुं तो अविहड नेह।
हुं तो अविहड नेह सदाई, में तुम दीठे संपति पाई,
चोवीसे जिनवर भवि(वि) वंदो,
ची(चि)र कालनां तुमे पाप नी(नि)कंदो ॥२॥ जी...

* * *

संवत सत्तर अठ्योत्तरे**(१७७८)** रे, रही **सूरत** चोमास,
चोवीस जिनवर में स्तव्या रे, पुं(पू)गी मुज मन आस।
पुं(पू)गी मुज मन आस रे नेहीं(हि), फागुण वि(व)दि पांचिम रवि तेहि,
श्रीविजयरत्नसूरि(री)सरराया, वाचि(च)क **देवे** बहु सुख पाया ॥१॥ जी...

संवत १७७८ वर्षे चैत्र सुदि ११ दिने लिखीतं **सूरत** नगरे श्री**देवविजयेन पं. कुशलविजय** गणि वाचनार्थम् ॥

शब्दकोश

१. माराथी, २. वहेली, ३. दशा-अवस्था, ४ निश्चितपणे, संपूर्णपणे, ५. लेणुं, ६. पसार करुं, ७. याद आवे (?), ८. दिवसे, ९. सुंदर, अलबेलो, १०. जोइये तेवा, ११. दबावी, १२. दगो, १३. थशे, १४. नजीक, १५. पासे, १६.जंगलमां (दूर), १७. फोकट, १८. तमोने, १९. समर्पित करी, २०. सरळ, २१. समुदाय, २२. प्रीति, प्रेम, २३. निष्फळ, २४. उपाधि, २५. नाटक, २६. स्वजनो, २७. निष्ठुर, २८. पसंद, विश्वास?, २९. तलावारनी धार, ३०. ठगाया, भूल्या.

* ♦ *

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहजकुशल-शिष्य कृत

सीमंधरजिन स्तवन

डिम्पलबेन शाह

आत्मकल्याणना मार्गमां सदैव भक्तिनी प्रधानता रही छे अने ते संदर्भमां अनेक महापुरुषो, कविओए नानी-मोटी रचनाओ करी छे। वर्तमानमां आवुं भक्ति साहित्य प्रचुरमात्रामां प्राप्त थाय छे अने तेनो उपयोग पण एटलो ज जोवा मळे छे। जिनेश्वरोनां स्वतंत्र स्तवनो, चोवीसीओ, विहरमाननां स्तवनो अने वीसीओ वगेरेनी रचनाओ समय-समय पर थती रही छे। जिनालयो, गृहचैत्यो, देववंदनो, भक्तिसंध्याओ, भावनाओना माध्यमे तेनो रसास्वाद माणता भक्तजनोनी आजना युगमां पण संख्या कम नथी। वर्तमान चौवीसीमां ५ जिनेश्वरो (आदिनाथ, शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीरस्वामी) परनी विशेष रचनाओ बाद अन्य कोई नाम होय तो ते छे विहरमान जिन श्री सीमंधरस्वामीनुं। विहरमान होवाना नाते, तेमां पण भरतक्षेत्रथी नजदीकमां मोक्षमार्ग चालु होवाथी भक्तोनो भावप्रवाह सीमंधरस्वामी प्रत्ये विशेष रह्यो छे। तेमनी ज स्तवना करती प्रायः अप्रगट एक रचनानुं अहीं प्रकाशन करवामां आवे छे।

कृति परिचय

सीमंधरस्वामी भगवाननी स्तवनारूप आ कृति अन्य स्तवनोथी थोडी भिन्न छे। परमात्माने केन्द्रमां राखी आत्मा अने मतिना संवादरूपे रचायेली आ कृतिने समझवा माटे पोतानी मतिने थोडी कसवी पडे तेम छे। वाचको तेना हार्दने सरळताथी समझी शके ते माटे तेनो कंइक सार अहीं रजू करीये छीये।

प्रस्तुत कृतिना प्रारंभे कर्ताए त्रिभुवनभानुनी उपमा साथे सीमंधरस्वामीनुं मंगल स्मरण कर्युं छे। प्रभुने कविए मनमंदिरना मोंघेरा महेमान तरीके वर्णव्या छे। आ मनमंदिरनो मालिक आत्मा अने तेनी गृहिणी (पत्नी) तरीके मतिनी परिकल्पना करी छे। आत्मा मतिने कहे छे के हे मति! जो तारी अनुमति होय तो प्रभुने आपणा मनमंदिरमां पधरावुं। त्यारबाद प्रभु केवा छे ते संदर्भे तेमना विविध गुणो, दोषत्याग, उपमा आदि द्वारा परिचय अपाय छे, साथे-साथे प्रभु प्रति भक्तिना उद्गार, आत्माने हितशिक्षा जेवी वातो पण वर्णवाई छे। यथा-

जेमणे कुमतिना कुटुंबनुं घर काणुं कर्युं छे तेवा प्रभु प्राहुणानुं टाणुं क्यारे आवशे। हे जीव तुं तेमना गुणोनुं स्मरण करीने विषयोनो त्याग कर, शा माटे दिलमां द्वंद करे छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रभु योगी, ध्यानी, मोक्षगामी, बुधजनोना अंतर्यामी छे, पुरुषोत्तम, त्रिभुवनस्वामी छे। तेमनामां दंभ, शोक, आसक्ति जेवा दोषो नथी, तेओ पवित्र देहने धरनारा, निष्कलंक, निष्पृह, निर्मोह, निंदा, निद्रा, निदान रहित छे। ममता, भय, चोरी आदि दुर्गुणोना समुदायथी पर छे। व्रत मर्यादारूपी रथना वाहक एवा भगवाने तमाम गोरीओ (स्त्रीओ)नो त्याग करेल छे। तेमणे तृष्णारूप बेडी तोडी नाखी छे, अनंतज्ञानरमणीथी रति जोडी छे, मिथ्यामतिरूप कंथेरी (बोरडी)ना त्यागी छे, तेमणे भवपरंपरानी दोरीने तोडी नाखी छे। तेओ हिंसा, हास्य, आशा, क्रीडाना त्यागी, जगतना सर्व जीवोनी पीडाने हरनारा छे। तेमनामां राग, द्वेष, द्रोह नथी, कामसुभट तो तेमनी नजीक पण फरकी शके तेम नथी, वैर, ईर्ष्या, कलह, पाप, मैथुन, गारव, शंका, कांक्षा, कालुष्यथी रहित प्रभु शत्रुने पण क्यारेय श्राप नहीं आपनारा छे।

आ प्रमाणे आत्मारूप पति पासेथी प्रभुना गुणो सांभळीने मतिरूपी पत्नी कहे छे के हे कंत! हुं तो तारा लोचननी बलिहारी छुं। तें पावन प्राहुणाने जोयो छे, ते सांभळी मनें अमृतनो अनुभव थयो छे, आवा प्राहुणाने लाववा माटे तमे मारी अनुमति मांगी, ते सारी वात नथी (अर्थात् आमां अनुमति मांगवानी जरूर ज न होय) जल्दी तेमने बोलावो, हुं तेमनी गुणदोरीथी बंधाई गई छुं। तेमने देखवानी मने तालावेली लागी छे, हवे तेमने प्राप्त न करुं तो अभागी गणाउं, आ (सीमंधरस्वामी) प्राहुणाने पाछळ पडी केडो छोड्या सिवाय घेर जल्दी बोलावो।

त्यार बाद आत्मारूप कंते मतिने आपेल प्रत्युत्तर घणो उपयोगी अने रोचक छे। ते कहे छे के हे मतिसुंदरी, ते तारा घरे केम आवे, तारा घरे तो एक तुच्छ गणाती व्यक्ति पण आववा तैयार न थाय केमके तारा पडोशी सारा नथी, तेओ गाली गलोच करता होय त्यां आवा सारा महेमान क्यांथी आवे। कवि अहीं खराब पाडोशीमां मदरूपी चंडालणी, कुमति चमारणी, मायारूपी माछण, कामरूपी बिलाडी घरमां फरी रही छे, जे उपशमादि मुषकोने खाई जाय छे, विषयरोगी ज्यां-त्यां वारंवार थूंक्या करे छे, अने तुं प्रमादमां पडी रहे छे, घरना तमाम आचारोने छोडी मोहनुं सुरापान करी मदमस्त रहे छे, त्यां ते पुरुषोत्तम तारा घरे केवी रीते पधारे, कदाच आवे तो पण आनंद केम पामे।

त्यारे मति कहे छे के हे कंत! आवुं अविचार्युं न बोलो। ते तो उपकारी पुरुष छे, जेम पुष्प खुश्बु आपवामां अने मेघ वर्षा करवामां भेद नथी राखतो तेम गुणगिरुआ तेओ ठाम-कुठाम नहि जुए। जे रीते निर्गुण तेवा पण सेवकनो निर्वाह कराय छे तथा चंद्रमामां रहेल कलंकने ध्यानमां नथी लेवातुं तेम प्रभु पण उदारता राखी जरूर आपणा घरे पधारशे। (अहीं प्रसिद्ध स्तवननी कडी याद आवी जाय के- "प्रभुजी! मुझ अवगुण मत देखो")

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आटलो संवाद प्रथम ढालमां चाले छे। ते पछीनी ढालमां वात वळांक ले छे अने मतिने प्रत्युत्तर आपतां पति आत्माराम कहे छे के हे सुंदरी! तुं खेद न करीश, प्रभु जरूर आपणा घरे पधारशे. तेम कहीने प्रभुनी रहेणी-करणी केवी छे वगेरे दर्शावतां कनककमल पर चरण, समवसरणना त्रण गढ, अशोकवृक्षादि प्रातिहार्य आदि गुणोनी वात करे छे। साथे-साथे जणावे छे के हे मति! तुं बहु ज चपल छे, तुं प्रभुनो दोष न देखती, जेमके तेओ चोत्रीस-चोत्रीस अतिशयरूप मानीनीओ साथे भोग-विलास करे छे छतां ब्रह्मचारी शिरोमणि कहेवाय छे, अनंती ऋद्धि पोते धारण करे छे, दान-पुण्य न करवा छतां ते विशिष्ट दाता तरीकेनो यश जगतमां ले छे, बीजी तने वात शुं करुं के ते एक पण देश, नगर, के गाम राखता नथी छतां त्रण भुवननुं राज भोगवे छे। आम तेमनुं स्वरूप अकल छे। अहीं कविनी दोषना रूपमां प्रभुना विशिष्ट गुणोनुं ज वर्णन करवानी विरोधालंकार युक्त छटा खरेखर अद्भूत छे जे सीधे सीधा कह्या होत तो आटली सरस असर न करत। प्रस्तुत कृतिमां गाथा-७ तथा १४ थी १६ मां रुपक अलंकारनो उपयोग थयो छे अने गाथा २६ थी २८ मां विरोधालंकारनो उपयोग करायो छे।

आम आ कृतिमांथी प्रभुना गुणोनी, दोष रहितनी वात तो जाणवा मळे छे साथे-साथे प्रभुने मनमंदिरमां बिराजमान करवा होय तो साधके केवा-केवा दोषोने दूर करवा वगेरेनो पण वाचकने बोध प्राप्त थाय छे। आम आ कृति अन्य कृतिओथी विलक्षण अने विशिष्ट तरी आवे छे। कृतिना शब्दो, प्रास, छंदरचना अने भाषाभिव्यक्ति ध्यानाकर्षक छे। कृतिनो आटलो परिचय प्राप्त कर्या बाद तेनुं वांचन अने गान वाचकने जरूर अभिरुचि लावनारुं बनशे।

कर्ता परिचय

बुध सहजकुशल सुहस्त सीसै गाईउं सिमंधरो।
श्री विजयदानमुनींद्र सेवक सकलचंद दया करो॥

अर्थात् उपाध्याय सहजकुशलजीना हस्ते दीक्षीत कोई शिष्य द्वारा सीमंधरस्वामीनी स्तुति कराई छे। विजयदानसूरिना सेवक एवा सकलचंद्रजी मारा पर (कर्ता पर) दया करो तेवो अर्थबोध थाय छे। कृतिना अंते आपेल प्रशस्ति उपरथी एक तबक्के एवुं जणाय छे के श्री विजयदानसुरीना शिष्य सकलचंद्रजी, तेमना शिष्य सहजकुशलजी अने तेमना हस्ते दिक्षीत कोई शिष्य द्वारा प्रस्तुत कृतिनी रचना थई होय। जो के आवी कोई परंपरानुं प्रमाण अत्यार सुधी मारा जोवामां आव्युं नथी। हा, तेनाथी विपरित प्रमाणो प्राप्त थयां छे, जेमके श्री विजयप्रभसूरिनी परंपरामां सहजकुशल नामे एक विद्वान थया अने तेमना प्रथम शिष्य सकलचंद्रजी हता। "प्रथम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिष्य श्री सहजकुशलना, सकलचंद उवजाय रे;" (जै.गु.क. भा. ३-४, पेज- २८०)

बीजी वात एम पण मळे छे के महो. हानर्षिगणि वगेरे लोंकागच्छना केटलाक ऋषिओए आ. हेमविमलसूरिना पवित्र साधुजीवनथी प्रभावित थइ, तेमनी पासे जइ आत्मकल्याण माटे संवेगीपणुं स्वीकारी, तेमना परिवारमां दीक्षा लीधी। तेमां महो. सहजकुशलगणि पण हता। तेमनो समय वि. सं. १६२८नी आसपासनो गणाय, जे समये भ. विजयदानसूरि विद्यमान हता (जैन परंपरानो इतिहास भाग-३)।

महो. धर्मसागरजी गणिवरे महो. सकलचंद्र गणिवरना समजावाथी राधनपुर जई भ. विजयदानसूरिने चतुर्विध संघनी वच्चे पोतानी नवी प्ररूपणा माटे 'मिच्छामि दुक्कडं' लखी आपेल ते वखते जे गीतार्थ भगवंतोनां मतां थयां तेमां आ. हीरविजयसूरि, महो. धर्मसागरगणि, उपा. विजयहंसगणि, पं. रूपजी गणि, पं. कुशलहर्ष, पं. श्रीकरण, पं. वानरऋषि, पं. सूरचंद्र, हापा गणि (पं. हानर्षि गणि) वगेरे साथे महो. सकलचंद्रगणि तथा पं. सहजकुशलजीनो पण नामोल्लेख प्राप्त थाय छे। (जैन परंपरानो इतिहास भाग-३)

विजयदानसूरि, सकलचंद्रजी अने सहजकुशलजी वच्चे गुरु, शिष्यादि बाबते क्यो संबंध रह्यो छे, शुं परंपरा छे तथा प्रस्तुत कृतिना वास्तविक कर्ता कोण छे ते संदर्भे विशेष संशोधन विद्वज्जनो करे तेवी अपेक्षा छे।

विशेष जणावानुं के आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा खाते प्रत-३११७२मां पण एक सीमंधरजिन स्तवन छे, जेनी रचना प्रशस्तिमां पण प्रस्तुत कृति प्रमाणे ज नामो प्राप्त थाय ।

प्रत परिचय

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरना हस्तप्रत ज्ञानभंडारमां संग्रहित हस्तप्रत क्रमांक- ७२७०२ पर जिनप्रतिमा रास अने सीमंधरजिन स्तवन छे। पत्रांक २अ-२आ पर पेटांक-२ अंतर्गत सीमंधरजिन स्तवन छे, स्तवननी पूर्णाहुति बाद प्रतिलेखन पुष्पिका आपी नथी, परंतु जिनप्रतिमा हुंडी रास पूरी थया बाद प्रतिलेखन पुष्पिकामां वि.सं. १७५९ अने प्रतिलेखक-सुजाणहंस नामनो उल्लेख मळे छे। सुंदर अने सुवाच्य अक्षरमां लखायेली आ प्रतमां पार्श्व व मध्य स्थानमां तिलकयुक्त फुल्लिका छे।

आ कृति संपादनमां पाठभेद माटे कोबा भंडारमां संग्रहित अन्य बे हस्तप्रतोनो उपयोग करेल छे। आदर्श प्रत क्र.-७२७०२ ने 'क' संज्ञा, पाठांतर माटे लेवायेल प्रत क्र. ३३४१० ने 'ख' संज्ञा तथा प्रत क्र.३३७८० ने 'ग' संज्ञा आपवामां आवी छे। त्रणेय प्रतोमांथी शुद्धपाठने मूल कृतिमां स्थान आपवानो प्रयास कर्यो छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीमंधरजिन स्तवन

सीमंधर जिंण त्रिभुवनभाणुं[१], पांहुणडो[२] एक अतुल[३] पिछांणुं।
जइ मति घरणी[४] तुझ चित जांणुं, ते हुं तस मनमंदिर आंणुं ॥१॥

कुमति कुटंब कीऊ घर काणुं[५], कबही मीलइ ऊस पाहुण टाणुं।
तो निज जिवत सफल वखांणुं, ए उपरांत किसुं गुणठाणुं ॥२॥

तुं तस गुंण सुणि विषय निवारी, काहि करइं उर[६] दंद[७] विच्यारी।
ऊहि ज सुं(स्यूं) लय लाउ [1]नारी, सो निसंग रहिउं ब्रह्मचारी ॥३॥

योगी ध्यान सुखासन गांमी, सो बुधजन मन अंतरजांमी।
ए प्रभुता छइ ऊनहीं पांमी, सो पुरिसोत्तम त्रिभुवन स्वांमि ॥४॥

दंभ नहीं तस शोक न गेही[८], सोही पुराण पुरुष सूचि देही[९]।
सो निकलंक निरीह[१०] अमोही, निंदा नीद[११] निदान[१२] न कोही ॥५॥

प्रेम नहीं ममता भय चोरी, सो जिंन पासि न राखि टोरी[१३]।
सो व्रत मर्यादा रथ धोरी, तिणइं भगवंतइ तजी सब गोरी ॥६॥

तिण तृष्णा बेडी सब फोडी, ग्यांन अनंत रमणी रति जोडी।
मिथ्या मति कंथेरी वीछोडी, तिंण भव संतति [2]दोरी तोडी ॥७॥

हिंस्या हास न आसा क्रीडा, सब [3]जग [4]जंतु तजि तिणैं पीडा।
राग न दोस न दोह न व्रीडा, कांम सुभट तस नावें नीडा ॥८॥

वैर न [5]मत्सर कलह न पापं, मेहुण गारव नहीं भवतापं।
शंका कंख कलुष नहिं जापं, ते भगवंत न दइ रिपु शापं ॥९॥

कहि मति सुणि जीउ कंता मेरा, हुं बलीहारी लोचन तेरा।
तिं पावन [6]पाहुणडओ दीठोओ, ते सुणतै चित अमीय पयठो ॥१०॥

ते नीःपाप करी हुं बंदी, तइ हुं तस गुण रासिइं फंदी।
ते [7]मूझ वात कही ए [8]गंदी, मुझ पूछण छोडो आनंदि ॥११॥

अब मुझ तस देखण लय लागी, जइ छोडुं तो हुइ अभागी।
प्रभु मुझ चित्त चडो क्युं जासी, सो मन जांणै त्रिभुवन वासि ॥१२॥

---

1. क -भारी, 2. ग- डोरी, 3. क-नग, 4. क-जंत, 5. क-मछर, 6. क- पाहुणडे, ख- पाहुणडउ,
7. ख-क्युं तुम्हइ, 8. ख- एक गंदी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो जिण मोहण पाहुण [9]तेडओ, लागि रहइ मत छोडो केडो।
सो सुंदरि क्युं तुझ घरि आवै, कबही तुझ घर [10]छोति[१४] न जावै ॥१३॥

तुझ पाडोसी वसै चंडाली, मद[१५] मतवाला दे बहु गाली।
[11]कुमति चमार अधोडी[१६] चूंथै, माया माछणि जाली गुंथै ॥१४॥

कामा रति घरि फिरै बिलाई[१७], मारी उपशम मूंसा[१८] खाई।
आरति[१९] [12]रोदन कटि आहेडी[२०], चिंतारां धणि धीवर[२१] चेडी[२२] ॥१५॥

विषय [13]क्षई तिहां खिण खिण थूकै, तुं परमाद कदी नवि मूंकै।
तुं निज घरि सुभध्यांन न लीपै, क्यौं तुझ घरि जिंन पाहुण छीपै ॥१६॥

तुं आचार सवै घर लोपै, मोह सुरा भाजन न विगोपै[२३]।
सो पुरिसोत्तम क्युं घरी आवै, जो आवै तो क्युं रति[२४] पावै ॥१७॥

कंत म बोलो ए अवीचारी, तिसों पुरुष कह्यो उपगारी।
गिरूआ ठांम कुठांम न चिंतें, मेघ हुइं सब भूमिइ कंतें ॥१८॥

हाथ दोई कुसमंजली वासै, तेंम गिरूआ नवि ठांम वीमासै।
जिंम निगुणो[२५] सेवक निरवहीइ[२६], [14]तिम ससिमाहै कलंकि रहीयै ॥१९॥

ढाल

खेद म करि मति सुंदरि, जिनपति आवस्ये रे।
मुझ मति लाविं लाज, सो जिंन रे जिंन रे इंद्राणि आराधीउ रे ॥२०॥

हुं तस रहणी करणी तुझ प्रति बूझवूं रे।
तस आराधन सीख, राखे रे राखे रे करि चतुराई आपणी रे ॥२१॥

कनक कमल पाय ठवतो, जिंनराय संचरइ रे।
[15]रूप कनकमणि तिन, गढमां रे गढमां रे प्रभु नीरागी उतरै रे ॥२२॥

सुरसिंहासन बैसै अशोक छांहडी[२७] रे।
ढलकै चामरपती, सोहे रे सोहे रे तिन छत्र सीर ताडीया रे ॥२३॥

धुप घडीसुं कुसम गंध तिंम महमहै रे।
दुंदुहि वाजै कोडि, गुंजे रे गुंजे रे प्रभु त्रिभुवन संसा हरै रे ॥२४॥

---

9. क- सो पावन पाहुणडओ तेडओ, 10. क-छोतां, 11. क-कुमन, ख-कुमत, 12. ग-रुद्रनि, 13.क-खयी, 14. ख-जुं, ग-जिम, 15. क-रूपक,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक वात तुं मनमां राखे तेहना रे।
दोष म [16]देखिस नार, सहजें रे सहजें रे जाति [17]चपल छै ताहरी रे ॥२५॥

सो चओतीस मनोहर [18]अतीसय मांननी रे।
तेहसुं विलसै भोग, कहावै रे कहावै रे ब्रह्मचारि सिर सेखरू रे ॥२६॥

ऋद्धि अनंती पोतें राखै आपणै रै।
नही तस दान न पुण्य, दाता रे दाता रे लोक भणै जस तेहनो रे ॥२७॥

एक कला तसु अनोपम जांणें सुंदरी रे।
देस नगर नवि [19]गाम, राखै रे राखै रे त्रिभुवन राज स भोगवै रे ॥२८॥

अकल [20]स्वरूप निरंजण चरित न जांणीइ रे।
गिरुआ करै सो होइ, सेवै रे सेवै रे तस पद सुरनर नायको रै ॥२९॥

॥ कलश ॥

इय सकल वेदि[२८] कुमति छेदी दुरति भेदी पारगो।
संसार छेदी [21]धूवम[२९] वेदी सुअपवेदी संकरो।

बुध सहजकुशल सुहस्त सीसै गाईउं सिमंधरो।
श्री विजयदान मुंनींद्र सेवक सकलचंद दया करो ॥३०॥

॥ इति श्री स्तवन संपूर्ण ॥

शब्दकोश

१. त्रण भूवनमां सूर्य समान, २. परोणा, ३. अमाप, ४. गृहिणी, ५. नष्ट, छिद्रवाळुं, ६. हृदय, दिल ७. उपाधि/क्लेश, ८. गृद्धि, आसक्ति, ९. शरीर, १०. निस्पृह,११. निद्रा, १२. नियाणुं, दुराग्रह, १३. टोळुं/समुदाय १४.अपवित्रता, मलिनता, १५. उन्मत्त, १६. ?, १७. बिलाडी १८.उंदर, १९. दुःख/पीडा, २०. शिकारी/पारधी, २१. माछीमार, २२. दासी, २३. तिरस्कार, छोडवुं, २४. आनंद, २५. निर्गुण, २६. निर्वहवुं-निर्वाह करवो, २७. छाया, २८. ज्ञाता, २९. मोक्ष.

❋ ♦ ❋

16.क-देखेस, ख-देखे, 17.क-सबण, 18. क- अतीसै, 19. क, ख- दांम, 20. क-रूप, 21. क-धुअम.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह

पुण्यविजयजी

(गतांकथी आगळ..)

पंचसंग्रहकारनो समय

पंचसंग्रहकार आचार्य क्या समयमां थया हशे अथवा तेओश्री कई शाखाना हशे इत्यादि विषे कशोय स्पष्ट उल्लेख क्यांय जोवामां आवतो नथी। फक्त स्वोपज्ञ टीकाना अंतनी प्रशस्तिमां पोते पार्श्वर्षिना शिष्य छे एटलुं ज जणाव्युं छे। एटले पंचसंग्रहकार भगवान श्री चंद्रर्षि श्री पार्श्वर्षिना शिष्य हता एथी विशेष आपणे एमने विषे बीजुं कशुं ज स्पष्ट रूपमां जाणी शकता नथी। तेओश्री महत्तरपद विभूषित हता के केम ए विषेनो उल्लेख पण तेमनी कृतिमां मळतो नथी। स्वोपज्ञ टीकामां पोताना माटे "चन्द्रर्षिणा चन्द्रर्ष्यभिधानेन साधुना" एटलो ज उल्लेख छे; तेम ज आचार्य श्री मलयगिरिए पण मया चन्द्रर्षिनाम्ना साधुना एटलो ज उल्लेख कर्यो छे। आम होवाथी पंचसंग्रहकार आचार्य महत्तरपद विभूषित हता ए माटे बीजा सामान्य रीते चालु उल्लेखनो ज आधार आपणे राखी शकीए।

आचार्य श्री चंद्रर्षिना सत्तासमय विषे एटलुं ज अनुमान करी शकाय के, गर्गर्षि, सिद्धर्षि, पार्श्वर्षि, चंद्रर्षि आदि ऋषि शब्दान्त नामो मोटे भागे नवमी-दशमी शताब्दीमां वधारे प्रचलित हतां। एटले पंचसंग्रहकार आचार्य श्री चंद्रर्षि महत्तर नवमा दशमा सैकामां थई गयेला होवा जोईए। ए जमानामां महत्तरपद पण चालु हतुं एटले चंद्रर्षि महत्तरना उपर जणावेल सत्ता समय माटे खास कोई बाध आवतो नथी, "उपमितिभवप्रपंच कथा'ना प्रणेता आचार्य श्री सिद्धर्षिना गुरु गर्गर्षिना प्रगुरु देल्ल[1] महत्तर महत्तरपदथी विभूषित हता।

चंद्रर्षि महत्तरनी अन्य कृतिओ

भगवान श्री चंद्रर्षि महत्तरकृत ग्रंथोमां पंचसंग्रह अने तेना उपरनी स्वोपज्ञ टीका सिवाय तेमनी बीजी कोई कृति हजु सुधी जोवामां नथी आवी। सित्तरि–सप्ततिका कर्मग्रंथ तेमनी कृति तरीके प्रचलित छे, परंतु ए मान्यता भूलभरेली छे, ए में श्री जैन

(अनुसंधान पृष्ठ-३१ पर)

1. अभूद् भूतहितो धीरस्ततो देल्लमहत्तरः। ज्योतिर्निमित्तशास्त्रज्ञः प्रसिद्धो देशविस्तरे ॥ उपमितिभवप्रपंचकथा प्रशस्ति ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि

राहुल आर. त्रिवेदी

(गतांक से जारी)

उपचारात्मक संरक्षण (Curative conservation)

पाण्डुलिपियों का उपचारात्मक संरक्षण बहुत सारे आयामों पर किया जाता है, अर्थात् यह संरक्षण कार्य हस्तप्रतों की वस्तुस्थिति पर निर्भर करता है। यह प्रक्रिया आधुनिक सुविधाओं से युक्त लेब(प्रयोगशाला) में की जाती है। लेब में उसके लिए जरूरी छोटे-बड़े सारे संसाधन उपलब्ध होते हैं। कितनी हस्तप्रतों पर यह प्रक्रिया करनी है, उनके पृष्ठों की संख्या कितनी है, प्रत्येक पृष्ठ को कितना व किस तरह का नुकसान हुआ है, तदनुसार उन्हें मजबूती देने के लिए पत्र के एक तरफ या दोनों तरफ लगाने के लिए कितनी गुणवत्ता और कितनी मोटाई वाला पेपर लेना होगा, पत्र कितनी बुरी तरह से चिपके हुए हैं एवं उनमें एसीड का प्रमाण कितना है तदनुसार उन्हें अलग करने के लिए व भविष्य के नुकशान को बचाने के लिए कौन-कौन से केमीकल व प्रक्रिया का प्रयोग करना पड़ेगा, इत्यादि अनेक बातों पर निर्भर करता है। इस कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व विशेषज्ञों द्वारा क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपियों का पूरा रिपोर्ट तैयार किया जाता है, उसके बाद बहुत सावधानी से उसका उपचार किया जाता है।

इस विषय में एन. एम. एम. एवं अन्य विशेषज्ञों के साथ हमारी जरूरी चर्चा हुई है। उन्होंने हमें नये लेब में निम्नलिखित वस्तुओं का होना आवश्यक है, ऐसी सूचना दी है। ये सामग्री अपनी आवश्यकतानुसार मंगवाई जा सकती है। अर्थात् किस सामग्री की कितनी मात्रा मंगवानी है, यह अपने कार्य की मात्रा पर निर्भर करता है। जो इस प्रकार है -

list of Chemical

1. Ethanol
2. Acetone
3. Toluene
4. Methyl Cellulose 4000 cps
5. Ortho PhenylPhenol
6. Hydrogen peroxide
7. Ammonia Solution
8. Thymol (थायमॉल)
9. Carbon Tetrachloride

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्तकुमार

पुस्तक नाम-जयन्ती प्रकरण, **कर्ता**-श्री मानतुंगसूरि, **वृत्तिकार**-श्री मलयप्रभसूरि, **पूर्व संपादक**-श्री विजयकुमुदसूरि, **पुनः संपादक**-साध्वी श्री चन्दनबालाश्री, **पूर्व प्रकाशक**-श्री मणिविजयगणिवर ग्रंथमाला, महेसाणा, **पुनः प्रकाशक**-श्रुतज्ञान प्रसारक सभा, अहमदाबाद, **पूर्व प्रकाशन वर्ष**-वि.सं. २००६, **पुनः प्रकाशन वर्ष**-वि.सं. २०६५, **भाषा**-मूल- प्राकृत व वृत्ति- प्राकृत एवं संस्कृत, **विषय**-प्रथम शय्यातरी के रूप में विख्यात जयन्ती श्रमणोपासिका द्वारा भगवान महावीर से पूछे गए तत्त्व संबंधी प्रश्नों का वर्णन.

प्रस्तुत ग्रंथ में भगवतीसूत्र के १२वें शतक के दूसरे उद्देशक में से उद्धृत जयन्ती नामक श्रमणोपासिका व भगवान महावीर के बीच हुए प्रश्नोत्तर का वर्णन है। इस ग्रंथ की रचना पूर्णिमागच्छ के आचार्य श्री मानतुंगसूरीश्वरजी महाराज ने प्राकृत भाषा में मात्र २९ गाथाओं के अन्तर्गत किया है।

महासती जयन्ती का परिचय देते हुए बता रहे हैं कि कौशांबी नगर के राजा सहस्रानीक की पुत्री, राजा शतानीक की बहन और उनके पुत्र राजा उदयन की बुआ थी। वह जीव-अजीव आदि तत्त्वों को समझनेवाली तथा भगवान महावीर के शासनकाल में प्रथम शय्यातरी (साधु-साध्वी को ठहरने हेतु स्थान देनेवाली) के रूप में विख्यात हुई।

भगवान महावीर जब कौशांबी नगर में पधारे तब राजा उदयन ने भगवान का सामैया किया था, उस समय उदयनराजा के साथ उसकी माता मृगावती और बुआ जयन्ती महासती ने भगवान के समवसरण में जाकर वन्दना की थी और भगवान की धर्मदेशना का श्रवण किया था। उस समय महासती के मन में जीवाजीवादि के संबंध में संशय उत्पन्न हुआ और उसने क्रमशः जीव गुरुता-लघुता को कैसे प्राप्त करता है? जीव संसार को परिमित-अपिरिमित कैसे बनाता है? जीव संसार को दीर्घकालिक और अल्पकालिक कैसे बनाता है? क्या जीव स्वभाव से भवसिद्धिक होता है और क्या सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध हो जाएँगे? यदि सभी जीव सिद्ध हो जाएँगे तो यह लोक भवसिद्धिक जीव से रहित नहीं हो जाएगा? जीव का जागृत रहना अच्छा है या सुप्त रहना? जीव का बलिष्ट होना अच्छा है या दुर्बल होना? तथा जीवों के पंचेंद्रिय आदि से संबंधित अनेक प्रश्न भगवान महावीर से पूछा तथा भगवान ने उत्तर देकर संतुष्ट किया। उन्हीं प्रश्नोत्तरों को गणधरों ने भगवतीसूत्र के १२वें शतक के दूसरे उद्देशक में जयन्ती प्रश्नोत्तर के रूप में संकलित कर दिया।

इस लघुकाय कृति पर कर्ता के शिष्य आचार्य श्री मलयप्रभसूरिजी ने ६६०० श्लोक प्रमाण बृहद्काय टीका का निर्माण कर दिया। इस कृति के माध्यम से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवाजीवादि तत्त्वों का बहुत ही विस्तारपूर्वक, सरल एवं सुगम्यरूप से व्याख्या की गई है। वृत्तिकार ने प्राकृत भाषा में रोचक कथाओं के माध्यम से जीवादि तत्त्वों को बहुत अच्छी तरह से समझाया है। प्रशस्ति में वृत्तिकार ने अपनी गुरुपरम्परा का सुन्दर उल्लेख किया है, जो इतिहास की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है।

जीवाजीवादि तत्त्वों का विस्तृत विवेचन करनेवाली अति उपयोगी इस कृति का शुद्धरूप से पुनः संपादन करके पूज्य साध्वीवर्या श्री चन्दनबालाश्रीजी महाराज साहब ने समाज पर बहुत बड़ी कृपा की है। उन्होंने इस आवृत्ति में विस्तृत विषयानुक्रमणिका देकर पाठकों पर बहुत बड़ा उपकारक कार्य किया है। प्रकाशन के अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत कृतिगत कथाओं की अकारादि अनुक्रमणिका, प्रशस्ति नामकाराद्यनुक्रमणिका, शब्दानुक्रमणिका, मूल गाथाओं की अकाराद्यनुक्रमणिका आदि देकर पाठकों को सरलता प्रदान की है। प्रथम आवृत्ति में रह गई अशुद्धियों को भी इस आवृत्ति में सुधार दिया गया है। इसका प्रकाशन तथा छपाई भी बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक किया गया है ।

पूज्य साध्वीवर्या श्री चन्दनबालाश्रीजी महाराज ने अपनी अस्वस्थता को ही जिनशासन के लिए एक वरदान बना दिया है। विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से इन्होंने निरन्तर अनेक उच्च दर्जे के सुसंशोधित प्रकाशनों को जिनशासन के चरणों में समर्पित करके अध्येताओं एवं आराधकों के लिए आराधना का मार्ग प्रशस्त किया है।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार का यह सौभाग्य है कि पूज्य साध्वीवर्याश्री ज्ञानमंदिर के ग्रंथों का सबसे अधिक उपयोग करने वाले विद्वानों में से एक हैं। पूज्य साध्वीश्रीजी भविष्य में भी इसी प्रकार उपयोगी ग्रंथों का संपादन करती रहें, और समाज के समक्ष बहुमूल्य रत्न प्रस्तुत करती रहें। पूज्य साध्वीवर्या के सुन्दर स्वास्थ्य हेतु शुभकामना व उनके इस कार्य की सादर अनुमोदना के साथ कोटिशः वंदना।

❋ ♦ ❋

(**कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह : अनुसंधान पृष्ठ-२९ से**)

आत्मानंद सभा, भावनगर तरफथी प्रसिद्ध थयेल कर्मग्रंथना बीजा विभागनी मारी प्रस्तावनामां स्पष्ट रीते साबित कर्युं छे। आ उपरांत सित्तरि कर्मग्रंथ उपरनी प्राकृत वृत्ति-चूर्णि तेमनी कृति होवानुं मानवामां आवे छे; परंतु सित्तरि चूर्णिनी अर्वाचीन प्रतिना अंतमां ते कशो उल्लेख मळतो नथी अने प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिओ, जे मारा जोवामां बे-त्रण आवी, ते अंतमांथी खंडित थई गयेली होई ए विषे चोक्कसपणे कशुं ज कही शकाय तेम नथी।

("पंचसंग्रह, द्वितीय खंड, आमुख, सने १९४१ मांथी साभार]

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

राष्ट्रसन्त श्रद्धेय गुरुदेव पूज्य आचार्य श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का शिष्य-प्रशिष्यों के साथ आत्मलक्षी चातुर्मासिक साधना हेतु मंगलप्रवेश सोल्लास सम्पन्न

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा ने अपने शिष्य-प्रशिष्यों के साथ दिनांक २३ जून, २०२० को श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा में चातुर्मास आराधना हेतु मंगल प्रवेश किया।

विश्वव्यापी कोरोना महामारी के कारण सरकारश्री के निर्देशों का पालन करते हुए इस पावन अवसर पर एक अति सादगीपूर्ण प्रवेशयात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें मंगलवाद्य के साथ सरकारश्री के निर्देशों का पालन करते हुए सीमित संख्या में गुरुभक्तों, श्रद्धालुओं एवं स्थानीय लोगों ने भाग लिया। यह प्रवेशयात्रा जूनाडीसा निवासी श्रीमती प्रज्ञाबेन विक्रमभाई महेता परिवार (हाल कोबा) के यहाँ से प्रस्थान कर "जय जय होजो, मंगल होजो" का घोष करते हुए चातुर्मास स्थल पर पहुँची। मार्ग के दोनों ओर स्थानीय श्रद्धालु नर-नारी मास्क आदि आवश्यक उपकरणों से सज्ज होकर सामाजिक दूरी का पालन करते हुए नतमस्तक होकर पूज्यश्रीजी को नमन कर रहे थे।

उपस्थित जनसमूह को परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा. ने मंगल आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि चातुर्मास का अवसर साधना और आराधना का सुन्दर संयोग है। इस विश्वव्यापी कोरोना महामारी से सुरक्षा करने में जब समस्त चिकित्साक्षेत्र लाचार सिद्ध हो रहा है, ऐसे समय में प्रभु की आराधना ही स्वयं की रक्षा का एकमात्र मार्ग है। जिससे किसी भी प्रकार के अनिष्ट से सुरक्षा हेतु एक विशेष सम्बल मिलता है और आत्मबल विकसित होता है। वर्षावास का महत्त्व समझाते हुए उन्होंने कहा कि यह समय हमारे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस समय में एक स्थान पर स्थिर होकर समाज के कल्याण व आत्मकल्याण हेतु साधना करते हुए अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए।

आचार्य श्री अमृतसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री अरुणोदयसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री विवेकसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी म. सा., गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी म. सा. आदि १८से अधिक साधु-साध्वीजी भगवन्त भी चातुर्मास प्रवेश के पावन अवसर पर उपस्थित थे।

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा. के साथ आचार्य श्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमृतसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री अरुणोदयसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री विवेकसागरसूरिजी म. सा., गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी म. सा. आदि श्रमण भगवन्तों का भी चातुर्मास श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा में ही हो रहा है।

चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी (खवासा, म.प्र. निवासी) स्व० रणजीतमलजी नान्हालालजी वागरेचा (जैन) की स्मृति में मातुश्री कान्ताबेन रणजीतमलजी वागरेचा, उनके पुत्र श्री दिलीप जैन, डॉ. अनिल जैन, श्री सुनील जैन तथा निशा शाह एवं समस्त वागरेचा परिवार की ओर से सभी पूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्तों को कांबली अर्पण किया गया। कोबा ट्रस्ट की ओर से चातुर्मास के लाभार्थी परिवार को शाल ओढाकर उनका अभिनन्दन किया गया।

समारोह का संचालन पूज्य श्री हर्षपद्मसागरजी म. सा. ने बड़े ही अनूठे ढंग से किया। पूज्य मुनि श्री श्रमणपद्मसागरजी तथा बालमुनि श्री पार्श्वपद्मसागरजी म. सा. ने सुन्दर भक्तिगान प्रस्तुत किया। कोबा ज्ञानमन्दिर की पालडी शहरशाखा में कार्यरत सेवाभावी कार्यकर्ती डॉ. शीतलबेन शाह ने अखण्ड अक्षत से मनोहारी गहुँली, अष्टमंगल और नंदावर्त्त की रचना की। उपस्थित श्रद्धालुओं का स्वागत करते हुए ट्रस्टी श्री दर्शितभाई जी. शाह एवं कारोबारी सभ्य श्री धनेशभाई शाह ने अपने हृदयोद्गार प्रगट किए।

आगामी कार्यक्रम –

चातुर्मास की इस अवधि में सरकारश्री के निर्देशानुसार श्रद्धालुओं के साथ विविध आध्यात्मिक साधना व आराधना की जाएगी। पुष्य नक्षत्र में परमात्मा का विशिष्ट अभिषेक आदि तथा नूतन माह के मांगलिक आदि कार्यक्रम सरकारश्री के निर्देशों का पूर्ण पालन करते हुए किए जाएँगे।

सभी कार्यक्रम पूर्ण धार्मिक वातावरण में सम्पन्न हुए। इस प्रवेशयात्रा में उपस्थित महानुभावों ने सरकारश्री के निर्देशों का पालन करते हुए मास्क आदि आवश्यक साधनों से सुसज्जित होकर तथा शारीरिक दूरी बनाकर सभी कार्यक्रमों को सफल बनाया एवं पूज्य गुरुभगवन्त के मंगल आशीर्वचन का लाभ लिया।

अयोध्या में रामन्दिर निर्माण हेतु
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा तीर्थ से रज और जल अर्पण

पिछले ५०० वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद सुप्रीम कोर्ट के आदेश से अयोध्या में रामलला के भव्य मन्दिर का निर्माण हो रहा है। इस मन्दिर के निर्माण हेतु विश्व हिन्दु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिषद् के द्वारा समग्र देश के पवित्र स्थानों की मिट्टी और नदियों का जल एकत्र किया जा रहा है।

इस सन्दर्भ में कर्णावती स्थित जैन जीर्थ, श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा से भी पूज्य राष्ट्रसन्त श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के आशीर्वाद के साथ-साथ ट्रस्टीश्रीओं के द्वारा विहिप के कार्यकर्त्ताओं को रज और जल अर्पण किया गया।

इस प्रसंग पर राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा, आचार्य श्री अमृतसागरसूरिजी, आचार्य श्री विवेकसागरसूरिजी तथा गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी की निश्रा में विश्व हिन्दु परिषद के गुजरात क्षेत्र के मन्त्री श्री अशोकभाई रावल, प्रान्तमन्त्री श्री राजेशभाई पटेल, प्रान्त समन्वयमंच प्रमुख श्री केतनभाई शाह, श्री नवीनभाई पटेल, श्री शक्तिसिंह झाला, श्री जीवराजभाई ठाकोर तथा अन्य कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र की ओर से श्री रजनीभाई शाह ने अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर राष्ट्रसन्त श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी ने कहा कि भगवान महावीर के चरणरज से पावन अयोध्या की भूमि जैनधर्म के आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव सहित पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि होने के कारण जैन तीर्थस्थान के रूप में भी प्रसिद्ध है। श्री राम को जैनदर्शन में उच्च दरज्जे से देखा गया है। जो सिद्धस्थान पर तीर्थंकर भगवान बिराजमान है उसी स्थान पर श्री राम भी बिराजमान है। 'नमो सिद्धाणं' कहकर प्रतिदिन उन्हें भी नमन किया जाता है। लक्ष्मणजी को अनागत चौविसी के तीर्थंकर माना गया है। सीता, द्रौपदी आदि सतियों का हम प्रातःकाल में स्मरण किये बिना अन्नजल ग्रहण नहीं करते हैं। इस प्रकार संस्कृति में काफी नजदीकियाँ और समानताएँ हैं।

इस विषय में विशेष जानकारी देते हुए विश्व हिन्दु परिषद् के समन्वय मंच के प्रमुख श्री केतनभाई शाह ने बताया कि इस पावन अवसर पर विश्व हिन्दु परिषद् मन्दिरों के साथ-साथ देरासरों, गुरुद्वारों तथा बौद्धमठों की पवित्र मिट्टी एकत्र कर रहा है।

जिस प्रकार विश्व हिन्दु परिषद् के नेतृत्व में हिन्दु, जैन, सिक्ख, बौद्ध आदि धर्मावलम्बियों ने एक साथ मिलकर अयोध्या में भव्य मन्दिर के निर्माण के लिए आन्दोलन चलाया था और बलिदान भी दिया था, उसी प्रकार अयोध्या में नवनिर्माणाधीन यह मन्दिर समग्र हिन्दु समाज को जोड़े रखने का कार्य करेगा। उन्होंने भारतीय संविधान में मुद्रित रामायण के चित्र का उदाहरण देते हुए भगवान श्रीराम को इस देश के नागरिकों के लिए आदर्श और मर्यादापुरुषोत्तम बताया था।

❋ ◆ ❋

For Private and Personal Use Only

राम जन्मभूमि पर निर्माणाधीन राममंदिर के लिए कोबातीर्थ के पवित्र जल और मिट्टी लेने के लिए पधारे हुए विश्वहिन्दुपरिषद के अग्रणी का राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी के सान्निध्य में सत्संग एवं सम्राट संप्रति संग्रहालय का अवलोकन

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

पूज्य राष्ट्रसंतश्री का संदेश

विराधनाओं से मुक्त होकर आराधना में जुड़ें

चातुर्मास का अवसर साधना और आराधना का सुन्दर संयोग है। इस विश्वव्यापी कोरोना महामारी ने हमारे दैनिक जीवन को बुरी तरह से प्रभावित किया है। विषमता का वर्णन करना जरूरी नहीं, इस भयंकरता से सब चिर-परिचित ही हैं। इस महामारी को नियन्त्रित करने में समस्त चिकित्सातन्त्र असमर्थ प्रतीत हो रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में अपने समय का सदुपयोग करते हुए व्यक्तिगत रूप से प्रभु भक्ति व आराधना ही स्वयं की रक्षा का एकमात्र मार्ग है। इससे हर प्रकार के अनिष्ट से स्वयं की सुरक्षा हेतु आत्मबल विकसित होता है। परम करुणानिधान वीतराग परमात्मा से प्रार्थना है कि सभी को सुख-शांति व आरोग्य प्राप्त हो।

- आचार्य पद्मसागरसूरि

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only